[illegible] Sahitya bhaarati (Hindi Text), gadya vividha (Hindi Non-[illegible] detailed): Intermediate First year, Second Language Hindi: Part II First Edition 2018, Pp. xvi + 192 + iv

© Telangana State Board of
Intermediate Education, Hyderabad

Printing, Publication and Distribution rights
Exclusively with Telugu Akademi, Hyderabad.

First Edition : 2018

All rights whatsoever in this book are strictly reserved and no portion of it may be reproduced by any process for any purpose without the written permission of the copyright owners.

Free Distribution by Government of Telangana
Not for Sale

Printed in India
Laser Typeset at M/s **Naini Hemalatha,** Hyderabad
Printed at M/s **Sai Datta Creations,** Hyderabad
Telangana

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

Chief Editor

प्रो. रायवरपु श्री सर्राजु
प्रोफ़ेसर तथा पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद

Editors / Course Writers

प्रो. शकीला खानम
डीन व अध्यक्ष, हिंदी तथा उर्दू विभाग,
डॉ.बी.आर.अंबेड्कर
सार्वत्रिक विश्वविद्यालय,
जुबिली हिल्स, हैदराबाद

डॉ. घनश्याम
सह—आचार्य, हिंदी विभाग,
बी.जे.आर. सरकारी महाविद्यालय,
नारायणगुड़ा, हैदराबाद

श्री डी. भद्रसेन
प्रिंसपल,
गवर्नमेंट सिटी जूनियर कॉलेज,
हैदराबाद

श्री एस. आनंद कुमार
प्रिंसपल,
गवर्नमेंट जूनियर कॉलेज,
सीताफलमंडी, हैदराबाद

श्री पी. जयकृष्णा
हिंदी प्राध्यापक,
गवर्नमेंट जूनियर कॉलेज,
राजेंद्र नगर, रंगारेड्डी जिला

श्रीमती श्यामली शाह
हिंदी प्राध्यापिका,
गवर्नमेंट जूनियर कॉलेज,
याचारम, रंगारेड्डी जिला

श्रीमती आशा शर्मा
हिंदी प्राध्यापिका,
गवर्नमेंट जूनियर कॉलेज, जनगांव,
जनगांव जिला

श्री सुरेश कुमार मिश्रा
राज्य संसाधक, हिंदी,
जेड.पी.एच.एस. मंसूराबाद
सरूरनगर, रंगारेड्डी जिला

201

होंगे कामयाब

X CLASS - HINDI TEXT BOOK

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी द्वारा प्रकाशित

प्रो. शकील खानम

हो़गे कामयाब

दसवीं कक्षा हिंदी पाठ्यपुस्तक (X CLASS HINDI TEXT BOOK)

[illegible]

श्रीमती [illegible]

[illegible]

[illegible]

प्रो. शकील खानम [illegible]

[illegible]

प्रो. शकुंतला रेड्डी [illegible]

डॉ. अनीता गांगुली [illegible]

श्री सय्यद मतीन अहमद [illegible]

डॉ. ए जी. श्रीराम [illegible]

[illegible]

श्री एस वेंकटेश्वर शर्मा [illegible]

श्री [illegible] रेड्डी [illegible]

श्री [illegible]पल्ली वेंकटेश्वर [illegible]

श्री सुवर्ण विनायक [illegible]

श्री सय्यद मतीन अहमद [illegible]

पाठ्यपुस्तक विकास एवं प्रकाशन समिति

श्रीमती ए. श्रीदेवसेना [illegible] श्री पी.वी. श्रीहरि [illegible] श्री ए. कृष्णा राव [illegible]

[illegible]

प्रकाशक

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी तेलंगाणा राज्य, हैदराबाद

© Government of Telangana State, Hyderabad

New Edition

First Published 2021

All rights reserved

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Sarvatrika Vidya Peetham, Telangana, Hyderabad.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

तेलंगाणा ओपन स्कूल सोसायटी, तेलंगाणा 2021-22

Published by:
Telangana Open School Society (TOSS) Hyderabad

Printed in India
at **M/s. Fourth Estate Communications Pvt. Ltd.,** Hyderabad.
For the Director, Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad, Telangana.

काव्यानुवाद की समस्याएँ
डॉ. शकीला खानम

विवेचनात्मक निबन्ध

डॉ. शकीला ख़ानम

विवेचनात्मक निबंध *लेखिका* : **डॉ. शकीला ख़ानम**

प्रकाशक	**मिलिन्द प्रकाशन** 4-3-178/2, कन्दास्वामी बाग हनुमान व्यायामशाला की गली सुल्तान बाज़ार हैदराबाद - 500 095 ☎ : 24753737 / 32912529
मुद्रक	भवानी ग्राफिक्स हैदराबाद
आवरण	वी. डिज़ाइन फोन : 98855 06088
प्रथम संस्करण	सितम्बर, 2010
मूल्य	एक सौ पचा रुपये ISBN : 81-86907-60-2 ₹ 150/-

VIVECHANATMAK NIBANDH - *by* Dr. Shakeela Khanam

अपने [illegible]
गहन अध्ययन [illegible]
कहा जाता है। निबंध [illegible]
प्रधान। विषय [illegible]
जाता है। [illegible]
बनकर आती [illegible]
एक उच्चकोटि की [illegible]
हुआ। साहित्य की [illegible]
क्षमता रखने वाली [illegible]
हैं, वहाँ निबंध विचारों [illegible]
साहित्यिक रचना जो [illegible]
विषय को व्यक्तिगत दृष्टि [illegible]
व्याख्यात्मक हो, निबंध [illegible]
अंगों का पूरा-पूरा विवेचन [illegible]
छाप है, जो वैयक्तिक [illegible]
में भाषा की पूर्ण शक्ति [illegible]
होती है। इसमें स्वच्छंदता [illegible]
है, जो अनियमित एवं [illegible]
प्रधानता होती है। इसलिए [illegible]
विधा ही निबंध है। [illegible]
विशेषताएँ लाने की [illegible]

"यदि गद्य कवियों [illegible]
भाषा की पूर्ण शक्ति का [illegible]
के सुप्रसिद्ध विद्वान [illegible]
में निबंध को गद्य साहित्य [illegible]
अनुसार गद्य का पूर्ण निकष [illegible]
प्राप्त करता है। निबंध [illegible]
विषय की कोई निश्चित [illegible]

मौलाना आज़ाद
की
वैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि

प्रो. वहाब क़ैसर

अनुवादः

प्रो. शकीला ख़ानम

Maulana Azad Kee Vigyanik Drishti

by

Wahab Qaiser

Translated by.

Prof. Shakeela Khanam

प्रथम संस्करण

© कौमी काउंसिल बराए फ़रोग़े उर्दू ज़बान, नई दिल्ली

प्रकाशक :

निदेशक,

कौमी काउंसिल बराए फ़रोग़े उर्दू ज़बान

पश्चिम खंड 1, आर.के. पुरम, नई दिल्ली — 110 066

ISBN : 81-7587-075-3

मुद्रक :

Dear Authors,

We are glad to inform you that your paper has been accepted as per our fast peer review proc ess:

Authors Name: प्रो. शकीला खानम

Paper Title: साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद की समस्याएँ

Paper Status: Accepted

Paper Id: IJ-1409221414

for possible publication in **International Journal of All Research Education &Scientif ic Methods, (IJARESM), ISSN No: 2455-6211", Impact Factor : 7.429,**

in the current Issue, **Volume 10, Issue 9, September - 2022.**

साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद की समस्याएँ

प्रो. शकीला खानम

कविता का अनुवाद अनेक अंशों पर आधारित रहता है। उनमे मुख्य है कविता की शैली। इस शैली में मुख्यतः शब्द-चयन, शब्द-शक्तियां, गुण, अलंकार, ध्वनि, छंद, नाद सौंदर्य आदि का प्रभाव रहता है। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के इन सभी अंशों को सामान रूप से ध्यान देना होता है। यही कारण है कि उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के अनुवाद और वैज्ञानिक, तकनिकी सामग्री आदि के अनुवाद की तुलना में काव्यानुवाद कठिन कार्य है। अतः काव्यानुवाद के संबंध में विद्वानों के बीच विभिन्न मत है, जिन्हें हम प्रधानतः तीन वर्गों में विभाजित्कर सकते हैं।

1. कुछ विचारकों के मतानुसार काव्यानुवाद अत्यंत कठिन कार्य है, अतः यह असंभव है। उनका मानना है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता।

इस वर्ग के समर्थक सिड्नी, दांते, हुम्बोल्तुस, वर्जिनिया वूल्फ, क्रोचे आदि रहे हैं। इन सभी ने इस इतावली कहावतका समर्थन किया है कि "अनुवादक बड़े गद्दार होते हैं" (Traduttori tradition) क्रोचे ने बहुत ऊंचे स्वर में घोषित किया- "अनुवाद असंभव होता है।"(Translation is an impossibility)[1]

उपर्युक्त विचारक प्रथम वर्ग के हैं, इनका समूह बड़ा है और उनका मत है कि कविता के अनुवाद में सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती।

2. दविता वर्ग के विचारकों का मानना है किकाव्यानुवाद असंभव नहीं है, किंतु वह दुसाध्य है। डॉ. रीता रानी के अनुसार- "इस वर्ग के विद्वानों ने 'असंभव' शब्द को लेकर आश्चर्य प्रकट किया है कि असंभव क्या होता है? प्रयत्न करने पर मानव के लिए असंभव कुछ नहीं है। प्रतिभा, बहुलता और अभ्यास से काव्यानुवाद की कठिनता को हल किया जा सकता है। इस वर्ग के समर्थकों में होरेस, क्विंटीलियन, त्रिसनो ड्राइडन, पोप और कॉडवेल आदि को रखा जा सकता है।" [2]

अतः कविता के अनुवाद में अनुवादक को बड़े परिश्रम के साथ-साथ सतर्क भी रहना चाहिए, तब कविता का अनुवाद साध्य हो सकता है।

3. तृतीय वर्ग के विचारकों ने यह कहा है कि कविता का अनुवाद हर कोई कर नहीं सकता। कविता का अनुवाद कवी ही कर सकता है, जिसमे कविता करने की क्षमता होती है। इस मतानुसार काव्यानुवाद पुनः सृजन ही है। अतः "काव्य की अच्छी समझ के बिना काव्यानुवाद नहीं किया जा सकता। अरसिक व्यक्ति कविता का कचूमर निकाल कर रख देगा, किंतु सहृदय व्यक्ति या कवी हृदय व्यक्ति कविता से अपने को तादात्मीकृत करते हुए उसका काफी सही या समीपवर्ती अनुवाद कर सकता है। इस वर्ग के समर्थकों में टी.एस. इलियट आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है। [3]

उपर्युक्त तीन वर्गों के मतों से यह स्पष्ट होता है कि मूल अर्थात स्रोत भाषा से लक्ष्य-भाषा में कविता का अनुवाद करना कठिन कार्य तो नहीं है, लेकिन मूल के सामान लक्ष्य भाषा में अनुवाद हो पाना कभी-कभी मुश्किल हो पाता है। समुचित क्षमता संपन्न अनुवादकों द्वारा यह कार्य सम्बहाव है।

आचार्य महावीर द्विवेदी के मतानुसार, सामान्यतया कवि ही काव्यानुवादक होते हैं। तभी वे समर्थ अनुवाद कर सकते हैं। काव्यानुवाद की साधारणतः कठिनाइयों और महत्त्व को स्पष्ट कटे हुए द्विवेदी जी कहते हैं-

"स्वतंत्र कविता करने की अपेक्षा दुसरे की कविता का अन्य भाषा में अनुवाद करना बड़ा कठिन काम है। एक शीशी में भरे इत्र को जब हम दूसरी शीशी में डालने लगते हैं, तब डालने ही में पहली कठिनाई उपस्थित होती है, और यदि बिना दो-चार बूँद इधर-उधर टपके, वह दूसरी शीशी में चला भी जाता है, जो इस उलट फेर में उसके सुवास का एक विशेशांश उड़ जाता है। एक भाषा की कविता का दूसरी भाषा में अनुवाद करने वालों को यह बात स्मरण रखनी चाहिए।

International Journal of All Research Education & Scientific Methods

UGC Certified Peer-Reviewed Refereed Multi-disciplinary Journal
ISSN: 2455-6211, New Delhi, India
Impact Factor: 7.429, SJR: 2.28, UGC Journal No. : 7647

Acceptance Letter

Dated: 13/09/2022

Dear Authors,

We are glad to inform you that your paper has been accepted as per our fast peer review process:

Authors Name: प्रो. शकीला खानम.

Paper Title: थर्ड जेंडर अनुदित कहानिया: एक समाज शास्त्रीय विश्लेषण

Paper Status: Accepted

Paper Id: IJ-1309221438

for possible publication in **International Journal of All Research Education & Scientific Methods, (IJARESM), ISSN No: 2455-6211", Impact Factor : 7.429,**

in the current Issue, **Volume 10, Issue 9, September - 2022.**

Kindly send us the payment receipt and filled copyright form asap. Your paper will be published soon after your payment confirmation.

Best Regards,

IJARESM Auth. Signatory INDIA

Editor-in-Chief,
IJARESM Publication, India
An ISO & UGC Certified Journal
http://www.ijaresm.com

थर्ड जेन्डर अनुदित कहानियाँ : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

थर्ड जेन्डर अनूदित कहानियां मूलतः पंजाबी की कहानियां है जो कि डॉ. एम. फ़िरोज़ खान द्वारा संपादित हैं। डॉ. फ़िरोज़ खान ने हमेशा अपनी लेखनी और संपादन कार्य में पिछड़ों, दलितों, मुस्लिमों और वंचित समाज को ही उठाया है। अधिकतर रचनाकारों की दृष्टि वहां तक नहीं पहुंचती है। लेकिन डॉ. फ़िरोज़ साहब ने पहले मुस्लिम विमर्श को उठाया तो उसको साहित्य में स्थान मिल गया, उसके बाद समलैंगिक समाज को उठाया तो साहित्य जगत में उसकी चर्चा हुई, लेकिन इस बार थर्ड जेन्डर के प्रश्नों के साथ साहित्य में एक नई सोच को सबके सामने ला दिया। हालांकि किन्नर समाज के प्रश्न अनेक रचनाकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, फिल्मकारों ने अपने-अपने माध्यम से उठाए हैं लेकिन इस समाज पर अधिक चर्चा नहीं हुई। जब से पूरी मजबूती से डॉ. फ़िरोज़ ने किन्नर विमर्श को उठाया है तो सृजनात्मक साहित्य और पत्रिकाओं में भी इस विमर्श को स्थान मिलने लगा है। कहा जाता है कि साहित्य का छात्र ही अधिक मानवता के बारे में सोच सकता है, इसी को डॉ. फ़िरोज़ ने किन्नरों के प्रश्नों को उठाकर सिद्ध भी किया है।

इस समय साहित्य जगत में अनेक विमर्श चल रहे हैं लेकिन सब विमर्श में एक समानता है कि वो पुरुष या स्त्री पर ही निर्भर हैं। जबकि किन्नर विमर्श शुद्ध मानवतावादी विमर्श है। इसमें स्त्री- पुरुष, जाति, धर्म की चर्चा ना होकर उन लोगो की चर्चा है जो न ही पुरुष हैं और न ही स्त्री हैं न ही उनका कोई धर्म है और न ही जाति। वह तो केवल मानवता को प्रसन्न रखने के लिए अपने पैरों में घुंघरू बांध ले तो नर, मादा और जाति-धर्म के ठेकेदारों को भी ख़ुशी का एहसास होता है। इस विमर्श में वह लोग होते हैं जो अपने घर-परिवार, रिश्तेदारों, नातेदारों और उसी समाज से निकाल दिए जाते हैं, जिसमे उनका जन्म हुआ होता है, फिर भी वह अपना घर परिवार छोड़कर समाज में खुशियां बांटने का काम करते हैं जिनको अनेक स्थानों पर अनेक पर्यायवाची नामों से जाना जाता है जैसे हिजडा, किन्नर, खुसरा, थर्ड जेन्डर, उभयलिंगी, जनखा आदि। फिर भी वह अपने अधूरे होने के दर्द को छुपाकर समाज के लिए जीवन यापन करते हैं, समाज को प्रसन्न रखने के लिए अपना सर्वत्र न्योछावर कर देते हैं, फिर भी समाज में उनको सभ्य नजरों से क्यों नहीं देखा जाता? क्यों उनको समाज, घर, परिवार छोड़ना पड़ता है। जबकि उनका हाड मांस तो मनुष्य जैसा ही होता है, यदि कुछ बदलाव है तो उनके जननांग का अल्पविकसित होना, इसमें उनका दोष तो नहीं है।

किन्नर सर्वशक्तिमान ईश्वर की वो रचना है जिसको न तो हमारा धर्म, समाज अपनाता है और न ही आज का पढ़ा लिखा समाज। इनका सभी जगह बहिष्कार किया जाता है। वे कहाँ जायें? क्या इन्हें जीने का अधिकार नहीं है? क्या इन्हें समाज में रहने का अधिकार नहीं है? उनको वो सब अधिकार हैं जो आम नागरिक को हैं, और यह संवैधानिक अधिकार इनसे कोई नहीं छीन सकता। आज बड़े-बड़े धर्म गुरु बड़े-बड़े आश्रमों में विलासितापूर्ण जीवन जी रहे हैं। वो कभी अपने धर्म प्रचार के लिए आगे नहीं आये।

थर्ड जेन्डर अनूदित कहानियों में पंजाब और उसके आसपास का वर्णन है। इन अनूदित कहानियों में जो समस्याएं बताई गयी हैं वे लगभग पूरे देश में किन्नरों के साथ हैं। थर्ड जेन्डर अनूदित कहानियों को समझने और विश्लेषण करने के लिए कहानी का वर्णन अलग-अलग प्रकार से करेंगे।

कहानी संग्रह की प्रथम कहानी करतार सिंह कृत 'हम जिनस' है। जिसको देवेन्द्र कुमार ने अनूदित किया है। इस कहानी में मुख्यतः उच्च वर्गीय परिवार जन्मा किन्नर है। जिसको उसके परिवार के सदस्य किन्नरों को नहीं देते हैं। उसके लिए 100 से ₹500 देकर परिवार की इज्जत बचाना सही समझते हैं। इसी बीच कस्तूरी को एक लड़की प्रेम करने लगती है। उससे संबंध बनाने का समय आया लेकिन कुछ नहीं कर सका। किन्नरों की पहचान किशोरावस्था से ही हो जाती है जैसे-जैसे बड़ा होता गया कस्तूरी की शक्ल, उसकी आवाज अजीब सी बनती जा रही थी। तब उसे समझ में आया कि अंतर क्या था लड़का, लड़की और किन्नर में।[1]

कस्तूरी के माता-पिता को पता लग गया की कस्तूरी न ही पुरुष है और न ही स्त्री। बल्कि वह हिजड़ा है। एक संभ्रांत परिवार में जन्मे एक बच्चे के कारण परिवार की प्रतिष्ठा समाज में कम हो जाएगी। जिसके कारण उसके परिवार को नीचा देखना पड़ेगा जोकि परिवार रिश्तेदारों के लिए कलंक है। कोई भी इसको पसंद नहीं करता है। ऐसे व्यक्ति से वैसे ही समाज बचता है। उसके चेहरे की बनावट भी बदल चुकी थी अर्थात उसके नैनपुर और न ही स्त्री वाले फिर भी एक लड़की को प्रेम करने लगी। कस्तूरी की खिड़की उसकी खिड़की के सामने खुलती थी। वह जब उसको देखती तो अपने हाथों से इशारा करती फिर भी कस्तूरी उसको नहीं देखता था। कस्तूरी ने घर पर ही रहकर दसवीं तक

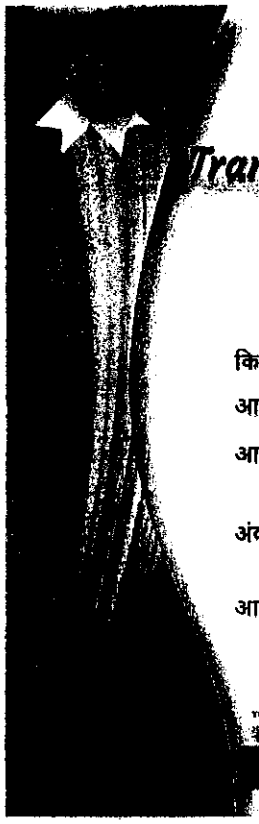

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu

Open or Transparent peer review

ISSN-2454-6283
IMPACT FACTOR-7.312

Peer Reviewed International Refereed Research Journal
Infront Of Hanuman Gad Kaman, Maharana pratp housing society, Nanded-431605 (MH)

यह प्रमाण पत्र शोध-ऋतु के अंतरराष्ट्रीय चयन समीति द्वारा चयनित आलेख को, शोध-पत्रिका के लिए स्वीकृत किये जाने पर प्रदान किया जा रहा है।

आलेख लेखक: प्रोफेसर शकीला खानम

आलेख शीर्षक: तकनीकी शब्द एवं अनुवाद में उनका प्रयोग

अंक: 29 खण्ड: 5 दि: July-sept., 2022

आपका अमूल्य आलेख भेजने के लिए शोध-ऋतु धन्यवाद ज्ञापित करता है।

IIJIF IMPACT FACTOR IIJS ISSN INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER

TOGETHER WE REACH THE GOAL

संपादक- डॉ. सुनील जाधव
९४०५३८४६७२

तकनीकी शब्द एवं अनुवाद में उनका प्रयोग

- प्रो. शकीला खानम -

शब्दों से ही भाषाएं प्राणवान बनती हैं। भाषा में शब्दों का निर्माण यूँ ही नहीं होता बल्कि उन शब्दों के अर्थ में ऐतिहासिक घटनाओं, मानसिक प्रवृत्तियों तथा संस्कृति के विभिन्न घटकों से संबंधों की डोरी बंधी होती है। इसीलिए एक ही शब्द के अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग अर्थ होते हैं, जो प्रयोग और संदर्भ पर आधारित होते हैं। इन्हें साहित्य, समाज, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में देखकर ही समझा जा सकता है। आधुनिक युग विज्ञान का युग है और वैज्ञानिक अन्वेषणों और प्रौद्योगिकी के अन्य संसाधनों के अनुप्रयोग ने एक नए तरह के साहित्य को फलने-फूलने का अवसर प्रदान किया है, जिसे तकनीकी अनुवाद कहा जाता है।

भारत में सभी आधुनिक भाषाओं के लिए समान वैज्ञानिक शब्दावली विकसित करने की दिशा में शासकीय स्तर पर पहल किए जाने का मुद्दा भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले ही उठ चुका था। केंद्रीय शिक्षा प्रमुख मंडल द्वारा सन 1940 में गठित वैज्ञानिक शब्दावली समिति ने यह सिफारिश की थी कि भारत में तथा दूसरे देशों में होने वाले विकास से अपेक्षित संपर्क बनाए रखने के लिए ऐसी वैज्ञानिक शब्दावली अपनाई जाए जो अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में आमतौर पर स्वीकृत शब्दों को यथासंभव आत्मसात कर ले। इस पर अनुवर्ती कार्रवाई स्वरूप उक्त मंडल ने सन 1942 में एक निर्देश समिति नियुक्त की जिसे भारतीय भाषाओं को उपयुक्त समूहों में बांटने और शब्दावली संबंधी विभिन्न प्रश्नों पर विचार करने के लिए कहा गया।

तत्पश्चात पूरे देश के लिए वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण के प्रश्न पर विचार करने हेतु सन 1950 में एक नए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली मंडल का गठन किया गया जिसने 11 दिसंबर 1950 को अपनी प्रथम बैठक में शब्दावली निर्माण के सिद्धांत निर्धारित किए। उन सिद्धांतों के आधार पर वैज्ञानिक व तकनीकी शब्दावली का निर्माण करने के लिए शिक्षा मंत्रालय में जनवरी 1952 में एक हिंदी अनुवाद की स्थापना की गई। साथ ही विभिन्न विषयों की शब्दावली को अनुमोदित करने के लिए विशेषज्ञ समितियों का गठन भी किया गया। दो-तीन वर्षों की अवधि में ही शब्दावली निर्माण के कार्य में तेजी से प्रगति हुई। इस कार्य विस्तार से हिंदी अनुवाद का भी विस्तार हुआ और उससे हिंदी प्रभाग का रूप दिया गया।

तकनीकी शब्द वे शब्द होते हैं जो मूलत: किसी प्रामाणिक विज्ञान व अनुसंधान से जुड़े होते हैं। प्रमाणिक विज्ञान की बात यहाँ इसलिए कही जा रही है, क्योंकि मान्यता प्राप्त अथवा पेटेंट किए गए वैज्ञानिक आविष्कारों, सिद्धांतों में प्रयुक्त होने वाले शब्द ही वैज्ञानिक शब्द की श्रेणी में आते हैं। जुगाड़ अथवा अप्रामाणिक शब्द वैज्ञानिक शब्दावली का हिस्सा प्राय: नहीं होते। उदाहरण के तौर पर यदि कोई किसान किसी स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों अथवा कच्ची नालियों की सहायता अथवा अप्रामाणिक व अवैज्ञानिक तरीके से उपाय करके अपने खेत में पानी ले जाने में सफल हो जाता है, तो यह जुगाड़ की श्रेणी में आता है। लेकिन, यदि इसी काम के लिए बकायदा डीजल अथवा बिजली की सहायता से चलने वाले पंपिंगसेट का उपयोग किया जाता है तो यह वैज्ञानिक पद्धति कहलाएगी और साथ ही उसमें उपयोग किए जाने वाले उपकरण अथवा हिस्से-पुर्जों के नाम वैज्ञानिक होंगे, जो सामान्य रूप से कहीं भी उसी नाम से जाने-पहचाने जाएंगे।

आजादी का अमृत काल : राष्ट्रभाषा में बदलती हिंदी

- प्रो. शकीला खानम -

बोलियों का विकसित रुप ही भाषा का स्वरुप धारण करता है| भाषा आगे चलकर अपनी क्षमता और प्रयोगकर्ताओं के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रयास से भाषा राजभाषा, संपर्क भाषा और राष्ट्रभाषा का स्वरुप धारण करती है| प्रत्येक आजाद देश यह चाहता है कि उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा हो| ताकि वह सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनितिक आदि तत्वों को विकसित करके विश्व पटल पर अपनी प्रभुसत्ता और एकता का प्रदर्शन कर सके| संपूर्ण राष्ट्र की सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत को अपनी भाषा के मार्फत से संपुष्ट कर सके| भाषा के विकास व संवर्धन से उस क्षेत्र के निवासियों को उससे प्रेम होता है और वे अपनी भाषा के साथ-साथ राष्ट्र के अन्य राष्ट्रीय प्रतीकों के समान ही उस भाषा से लगाव और गर्व महसूस करने लगते हैं| जब भाषा के प्रति अनुराग और लगाव समूचे देश वासियों को हो जाता है और वे उसे गर्व के साथ प्रयोग में लाने लगते हैं तो वह राष्ट्रभाषा कही जाने लगती है| लेकिन राष्ट्रभाषा की अवधारणा में समूचा राष्ट्र शामिल होता है अन्यथा राष्ट्रभाषा संकल्पना के अनुरुप आकार धारण नहीं पाती|

महात्मा गाँधी के कथन 'अपनी भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है|' इसमें कोई संदेह नहीं है कि अभी भारत की अपनी कोई घोषित राष्ट्रभाषा नहीं है| हम जब इस बात का अर्थ समझते हैं और विचार करते हैं तो लगता है जैसे किसी ने हमें गूँगा कह दिया हो| किसी के द्वारा गूंगा कह दिया जाना हमारे लिए हमारे लिए किसी झन्नाटेदार तमाचे से कम नहीं लगता| लेकिन यह एक कटु सत्य है और हमारे सामर्थ्य को चुनौती देने वाला प्रश्न है| हम भारत में बहुतायत से बोली और समझी जाने वाली हिंदी भाषा को अभी तक संवैधानिक रूप से राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दे पाए हैं और इस बात पर संतोष कर लिए हैं कि भारत में कम से कम हिंदी को राजभाषा का दर्जा तो हासिल है| यह कैसी विडंबना है कि जिस भाषा ने आजादी की लड़ाई में समूचे देश को एक सूत्र में पिरोया और सैकड़ों टुकड़ों में बँटे रियासतों वाले इस देश को एक भारत के रुप में स्थापित किया आज वही भाषा हमारी राष्ट्रीय पहचान की मोहताज बनी हुई है|

हालाँकि हिंदी अत्यंत सहज, सरस, सरल, बोधगम्य भाषा है| संभवत: इसे राजभाषा बनाए जाने के पीछे भी यही कारण भी रहा है| हालाँकि राजभाषा बनने से हिंदी का प्रयोग केंद्र सरकार के कार्यालयों, सार्वजनिक उपक्रमों और बीमा कंपनियों में बढ़ा है, फिर भी राजभाषा को विकसित करने के लिए जिस प्रगति की अपेक्षा हमारे संविधान में की गई थी, वह प्रगति कहीं दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती| जैसा कि हम जानते है राजभाषा की परिधि शासन-प्रशासन तक सीमित है, जबकि राष्ट्रभाषा के विकास के लिए सारा आसमान चाहिए| राष्ट्रभाषा किसी सीमा विशेष में बँधकर विकसित नहीं हो सकती, उसे विकसित और संवर्धित होनेके लिए खुला आसमान और पातल की गहराइयों सा महौल चाहिए| क्योंकि उसे अपने देश के प्रत्येक नागरिकों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को पूरा करना होता है| वह राजा से लेकर रंक तक की भाषा होती है, उसमें सभी आयु व आय वर्ग के नागरिकों की आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता और नवसृजन एवं नवोन्मेष की ऊर्जा होती है| संयोग से ये सारी शक्तियाँ हमारी हिंदी में हैं|

आजादी के बाद कई मौकों पर हिंदी को स्थापित करने के संबंध में जब प्रयास चल रहे थे तो उसका विरोध होना जो शुरु हुआ, उससे राष्ट्रभाषा के रुप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने में आती कठिनाइयों को देखते हुए पंडित जवाहर लाल नेहरु को कहना पड़ा 'हिंदी स्वयं अपनी ताकत से बढ़ेगी|' पंडित नेहरु एक युगद्रष्टा थे| उन्होंने जो बात कहीं वह आज अक्षरश: सही साबित होती दिख रही है| आजादी के बाद हमने हिंदी को स्वत: विकसित होने नाम पर छोड़ दिया और संवैधानिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सरकारी विभागों आदि में राजभाषा बनाने की खानापूर्ति कर दी| भाषा के विकास में धीरे-धीरे सरकारी प्रयासों का हस्तक्षेप कम हो गया| हालाँकि सरकार के प्रयासों में कमी भले ही रही लेकिन सरकार ने हिंदी को राजभाषा बनाने के प्रयास किए उससे प्रयोजनमूलक हिंदी और तकनीकी व वैज्ञानिक हिंदी आदि क्षेत्रों में विकास के कई रास्ते खुले| फिर

पंजीयन संख्या/RNI No.:-TELHIN/2016/70799
पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल

ISSN : 2456-9445
सुब्रह्मण्य भारती विशेषांक

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड–5 अंक–4, आश्विन–मार्गशीर्ष, 2078 / अक्टूबर–दिसंबर, 2021

संरक्षक
श्री अनिल शर्मा 'जोशी'
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा
ई–मेल : vicechairmankhs@gmail.com

प्रधान संपादक
प्रो. बीना शर्मा
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : dr.beenasharma@gmail.com

संपादक
डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., हैदराबाद केंद्र
ई–मेल : gwanode@gmail.com

सह–संपादक
डॉ. परमान सिंह
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : cihmysore@gmail.com

प्रकाशन प्रबंधक
डॉ. निरंजन सिंह
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : niranjansingh1970@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार
श्री अरुण कुमार जैमिनि
केंद्रीय हिंदी संस्थान, दिल्ली केंद्र
ई–मेल : arunjaimini@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. जी. गोपीनाथन
पूर्व कुलपति, म.गां.अं.हिंदी वि.वि., वर्धा
ई–मेल : gopinathan.govindapanicker@gmail.com

प्रो. टी. आर. भट्ट
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी, कर्नाटक वि.वि., धारवाड
ई–मेल : trbhatdwd@gmail.com

प्रो. एम. ज्ञानम
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : gandhignanam@yahoo.co.in

प्रो. एम. वेंकटेश्वर
पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी, इफ्लू, हैदराबाद
ई–मेल : mannar.venkateshwar9@gmail.com

प्रो. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी
पूर्व आचार्य, श्री वेंकटेश्वर वि.वि., तिरुपति
ई–मेल : increddy.1954@gmail.com

प्रो. प्रमोद कोवप्रत
हिंदी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय, मल्लापुरम
ई–मेल : drpramodcu@gmail.com

नामदेव गौड़ा
डीन एवं डीन, कर्नाटक राज्य.अ.म. विश्वविद्यालय, विजयपुरा
ई–मेल : namdevgouda@gmail.com

डॉ. जयशंकर यादव
उ. नि. क्षेत्रीय सहा. निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार
ई–मेल : drjaishankar50@gmail.com

डॉ. सी. जयशंकर बाबु
सहायक आचार्य एवं अध्यक्ष, पांडिचेरी विश्वविद्यालय
ई–मेल : professorbabuji1@gmail.com

डॉ. वी. पद्मावती
सिस्टमाध्यक्ष, पी.एस.जी.आर.कृ.म.महाविद्यालय, कोयंबतूर
ई–मेल : vpadmavathy@psgrkcw.ac.in

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
हैदराबाद केंद्र
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

14.	महाकवि भारती का राष्ट्रीय चिंतन	: डॉ. जी. शांति डॉ. एस. गुरुज्ञानांबिका	98
15.	भारतियार का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	: डॉ. शोभना कोक्काडन डॉ. बी. अनिरुद्धन	103
16.	भारतीय राष्ट्रीयता के प्रतीक– तमिल राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती	: डॉ. वासुदेवन 'शेष'	111
17.	भारतियार के साहित्य में राष्ट्रवाद और समाज सुधार	: डॉ. श्रीनिवास राव	117
18.	राष्ट्रवाद के सशक्त हस्ताक्षर : तमिल के महाकवि सुब्रह्मण्य भारती	: डॉ. पी. सी. कोकिला	124
19.	सुब्रह्मण्य भारती के लेखन से संवाद	: डॉ. भीम सिंह	132
20.	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती के विविध पक्ष	: प्रो. ललिता एन.	145
21.	राष्ट्रभक्त सुब्रह्मण्य भारती की पत्रकारिता	: डॉ. सी. जयशंकर बाबु	153
22.	सुब्रह्मण्य भारती : एक समाज सुधारक के रूप में	: डॉ. नागरत्ना एन. राव	163
23.	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती के साहित्यिक चिंतन के विविध आयाम	: डॉ. प्रियंका कुमारी	169
24.	सुब्रह्मण्य भारती और नारी दर्शन	: प्रो. शकीला खानम	176
25.	आज़ादी का जोश भरने वाले महाकवि सुब्रह्मण्य भारती	: डॉ. मंजुला वाधवा	182
26.	सुब्रह्मण्य भारती और नारीवाद	: डॉ. सफरम्मा	191
27.	महाकवि सुब्रह्मण्य भारती का साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में योगदान	: संतोष वसंत कांबले एवं : पूनम शर्मा	197
•	चित्र विथिका		203
•	लेखकों की सूची		205
•	सदस्यता फॉर्म		208

सुब्रह्मण्य भारती और नारी दर्शन

प्रो. शकीला खानम

शोध सार : भारती जी भले ही मूलतः तमिल भाषा के साहित्यकार रहे, पर उनकी साहित्य–साधना सदैव राष्ट्रीय बनी रही। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि सुब्रह्मण्य भारती आधुनिक लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में एक उदीयमान भास्कर की तरह प्रकाशमान थे। उन्होंने अपनी चिंतनधारा से कई राष्ट्रीय व सामाजिक मुद्दों को प्रभावित किया, जिनमें विशाल भारतवर्ष की परिकल्पना, राष्ट्रगौरव की अवधारणा, महिला सशक्तीकरण, अस्पृश्यता निवारण, समानता व बंधुता आदि मुद्दे प्रमुख हैं।

बीज शब्द : नारी दर्शन, भारतियार, सुब्रह्मण्य भारती, समाज, शिक्षा

मात्र जातियाँ दो, नर नारी अन्य न कोई,
सद्वचनों से मार्गप्रदर्शक मात्र श्रेष्ठ है। – सुब्रह्मण्य स्वामी

सुब्रह्मण्य भारती, जिन्हें मुख्यतः 'भारतियार' के नाम से जाना जाता है, के साहित्य को पढ़ने से पता चलता है कि भारती जी की रचनाधर्मिता को किसी एक विधा, विषय अथवा धारा में बाँधना संभव नहीं है। वे जितने दार्शनिक हैं, उतने ही समाजसेवी भी। वे जितना स्वदेश से प्यार करते थे, उतना ही देश के भीतर की सामाजिक बुराइयों से भी आहत थे। महिला उत्पीड़न और असमानता के मुद्दे पर भारती जी ने अपनी भावनाओं को खुलकर उजागर किया है। समस्या चाहे स्त्री शिक्षा की हो या फिर देश के विकास में आधी–आबादी से योगदान लेने की बात हो, भारती जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपना पक्ष बड़े ही बेबाक तरीके से समाज के सामने रखा है। स्वतंत्र भारत के भीतर भारती जी सभी भेदों का नाश देखना चाहते थे ताकि देश का विकास समन्वित रूप से हो सके और सभी बुराइयों का समूल नाश हो सके। प्रस्तुत आलेख भारती जी के नारी दर्शन पर आधारित है और इसमें उनकी विभिन्न रचनाओं अथवा चिंतन में प्रतिबिंबित नारी दर्शन का उल्लेख किया गया है।

सुब्रह्मण्य भारती का पूरा जीवन बहुत ही घटनाक्रमपूर्ण रहा। वे मात्र लगभग 39 वर्ष का अल्पायु जीवन ही जी सके। लेकिन उन्होंने जितना जीवन जिया, भरपूर जिया। उन्होंने 'कम जिओ, पर बेहतर जिओ' के सूक्ति वाक्य को चरितार्थ किया। बचपन में ही वे मातृविहीन हो गए। फिर उन्हें विमाता का लाड़–प्यार प्राप्त हुआ। उनके पालन पोषण में उनकी बुआ का भी बहुत योगदान था। फिर उनके जीवन में उनकी पत्नी चेल्लम्मा का आगमन हुआ। महिलाओं के स्नेह से जिस भारती 'भारतियार' नामक चिंतक, विचारक, कवि का निर्माण हुआ, उसे ही सुब्रह्मण्य भारती के नाम से जाना जाता है।

भारती जी भले ही मूलतः तमिल भाषा के साहित्यकार रहे, पर उनकी साहित्य–साधना सदैव राष्ट्रीय बनी रही। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी

साहित्य-सेतु

वर्ष : 6-7 अंक : 23-25 अप्रैल-दिसंबर 2020 ई.

दक्खिनी हिंदी - विशेषांक

संपादक
डॉ. घनश्याम
निदेशक
हिंदी अकादमी

अतिथि संपादक
एफ. एम. सलीम

सह-संपादक
पी.उज्ज्वला वाणी

प्रबंधक
पी.पद्मजा

परामर्शमंडल
डॉ. एम.वेंकटेश्वर
डॉ. बी.सत्यनारायण
डॉ. शकीला ख़ानम
डॉ. वी.कृष्ण
डॉ. ऋषभदेव शर्मा

प्रकाशक
हिंदी अकादमी
हैदराबाद

* Hindi Academy, Hyderabad -
As per the XIth Schedule to the Gazette of India Extraordinary Part-II S.N.50 Dted 01.03.2014

संपादकीय मंडल
हिन्दी अकादमी
8 वी मंज़िल, वेस्ट विंग,
गगन विहार (गांधी भवन के सामने).
एम.जे.रोड, नामपल्ली,
हैदराबाद - 500 001. (आं.प्र)
फोन: 040-2465 4849

साहित्य-सेतु (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति-नीति अथवा लेखकों के विचारों से हिन्दी अकादमी अथवा संपादक-मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।
- साहित्य-सेतु से संबंधित सभी विवादास्पद मामले सिर्फ़ हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।

शुल्क भेजने तथा 'साहित्य-सेतु' मंगवाने का पता:
(मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट 'हिन्दी अकादमी' के नाम)
निदेशक
हिन्दी अकादमी
8 वी मंज़िल, वेस्ट विंग,
गगन विहार (गांधी भवन के सामने).
एम.जे.रोड, नामपल्ली,
हैदराबाद - 500 001. (आं.प्र)
फोन: 040-2465 4849
Email:statehindiacademy@gmail.com
Web:www.aphindiacademy.org

व्यक्तिगत : Rs.150/- आजीवन : Rs. 1500/-
शिक्षण संस्थाओं के लिए : वार्षिक : Rs. 500/- : आजीवन : Rs. 2000/-
अन्य संस्थाओं के लिए : वर्षिक: Rs.1000/-: आजीवन : Rs. 3000/-

मुद्रक : कर्षक ऑर्ट्स प्रिन्टर्स, 40, एपीएचबी, विद्यानगर, हैदराबाद - 500044, तेलंगाना
फोन : 040-27618261

Printed by Dr. Ghanshyam, Director, Hindi Academy, Hyderabad Published by Dr. Ghanshyam, Director on behalf of Hindi Academy, Hyderabad and karshak Arts Printers, 40, APHB, Vidyanagar, Hyderabad-500044, Telangana, Ph.No.040-2761826 and Published at Hindi Academy, R/o Gagan Vihar, 8th Floor, West Wing, Nampally, Dist. Hyderabad - 500 001. Editor : Dr. Ghanshyam.

संपादकीय 5
अतिथि संपादक की कलम से 8

खण्ड - 1

विमर्श 12
'दक्खिनी का पद्य और गद्य' : भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर 13
- एम.वेंकटेश्वर
''दक्खिनी'' केवल मुशायरों की भाषा नहीं - शकीला ख़ानम 20
''दकनी मुहावरे और कहावतें'' - आनंद राज वर्मा 27
दक्खिनी के प्रमुख कथात्मक काव्य - प्रवीण प्रणव 34
मुल्ला वजही : जीवन और साहित्य - अफ़सर उन्निसॉ बेगम 48
दकनी हिन्दी के पुरोधा उर्दू के जनक : वली औरंगाबादी 57
- सुषमा देवी
संस्कृत और दकनी का भाषिक संबंध - शेख़ अब्दुल गनी 61
हैदराबाद में दक्खिनी हिन्दी के कवि नरेंद्र राय - अहिल्या मिश्रा 73
दक्खिनी हिन्दी पर मराठी का प्रभाव - एस.टी.मेरवाडे 79
दक्खिनी हिन्दी साहित्य के विकास में संतों का योगदान 82
- सुनील गुलाबसिंग जाधव
जीवन से गहरे जुडा था दक्खिनी का साहित्य 89
- सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय 1580-1627 ई. - सुरेशदत्त अवस्थी 95
दक्खिनी हिंदी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि - डी. विद्याधर 110

खण्ड-2 116

संचयन
दक्खिनी काव्य का सामाजिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ 117
- बालकृष्ण शर्मा रोहिताश्व
दक्खिनी साहित्य का इतिहास - श्रीराम शर्मा 128
मुल्ला वजही की दास्तान 'सबरस' के कुछ दिलचस्प उद्धरण 139
- मजीद बेदार

Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143
INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

INTERNATIONAL E-RESEARCH JOURNAL

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL
February - 2019 SPECIAL ISSUE- 117

Literature & Translation

Guest Editor:
Dr. B. S. Jagdale
Principal
MGV's Arts, Science & Commerce College,
Manmad, Dist. Nashik [M.S.] INDIA

Chief Editor :
Dr. Dhanraj T. Dhangar

Executive Editor of the issue :
Dr. P. G. Ambekar
Dr. V. T. Thorat
Dr. Shailaja Jaiswal
Prof. Mrs. Kavita Kakhandaki
Prof. J. P. Jondhale
Prof. M.M. Ahire
Dr. Mrs. Yogita Ghumare

SWATIDHAN PUBLICATIONS

'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) – 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)–0.676 (2013)
Special Issue 117- Literature & Translation
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-2019

साहित्यिक अनुवाद : काव्यानुवाद की समस्याएँ

प्रो. शकीला खानम
Dean, Faculty of Arts,
HoD Hindi,
Director UGC-DEB Affairs & CD
Dr. B.R. Ambedkar Open University
Road.No 46, Jubilee Hills, Hyderabad, 500019.
Email : profkhanam@gmail.com
Mob : 9441881580,7780559185

ता का अनुवाद अनेक अंशों पर आधारित रहता है। उनमे मुख्य है कविता की शैली। इस शैली में मुख्यतः शब्द-ſ, शब्द-शक्तियां, गुण, अलंकार, ध्वनि, छंद, नाद सौंदर्य आदि का प्रभाव रहता है। लक्ष्य भाषा में स्रोत भाषा के सभी अंशों को सामान रूप से ध्यान देना होता है। यही कारण है कि उपन्यास, कहानी, नाटक आदि के अनुवाद वैज्ञानिक, तकनिकी सामग्री आदि के अनुवाद की तुलना में काव्यानुवाद कठिन कार्य है। अतः काव्यानुवाद के । में विद्वानों के बीच विभिन्न मत है, जिन्हें हम प्रधानतः तीन वर्गों में विभाजितकर सकते हैं।

1. कुछ विचारकों के मतानुसार काव्यानुवाद अत्यंत कठिन कार्य है, अतः यह असंभव है। उनका मानना है कि कविता का अनुवाद हो ही नहीं सकता।

   इस वर्ग के समर्थक सिड्नी, दांते, हुम्बोल्तुस, वर्जिनिया वूल्फ, क्रोचे आदि रहे हैं। इन सभी ने इस इतावली कहावतका समर्थन किया है कि "अनुवादक बड़े गद्दार होते हैं" (Traduttori tradition) क्रोचे ने बहुत ऊंचे स्वर में घोषित किया- "अनु[illegible]।"(Translation is an impossibility)[1]

   उपर्युक्त विचारक प्रथम वर्ग के हैं, इ[illegible] है और उनका मत है कि कविता के अनुवाद में सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती।

2. दविता वर्ग के विचारकों का मानना है किकाव्यानुवाद असंभव नहीं है, किंतु वह दुसाध्य है। डॉ. रीता रानी के अनुसार- "इस वर्ग के विद्वानों ने 'असंभव' शब्द को लेकर आश्चर्य प्रकट किया है कि असंभव क्या होता है? प्रयत्न करने पर मानव के लिए असंभव कुछ नहीं है। प्रतिभा, बहुलता और अभ्यास से काव्यानुवाद की कठिनता को हल किया जा सकता है। इस वर्ग के समर्थकों में होरेस, क्विंटीलियन, त्रिसनो ड्राइडन, पोप और कॉडवेल आदि को रखा जा सकता है।" [2]

   अतः कविता के अनुवाद में अनुवादक को बड़े परिश्रम के साथ-साथ सतर्क भी रहना चाहिए, तब कविता का अनुवाद साध्य हो सकता है।

3. तृतीय वर्ग के विचारकों ने यह कहा है कि कविता का अनुवाद हर कोई कर नहीं सकता। कविता का अनुवाद कवी ही कर सकता है, जिसमे कविता करने की क्षमता होती है। इस मतानुसार काव्यानुवाद पुनः सृजन ही है। अतः "काव्य की अच्छी समझ के बिना काव्यानुवाद नहीं किया जा सकता। अरसिक व्यक्ति कविता का कचूमर निकाल कर रख देगा, किंतु सहृदय व्यक्ति या कवी हृदय व्यक्ति कविता से अपने को तादात्मीकृत करते हुए उसका काफी सही या समीपवर्ती अनुवाद कर सकता है। इस वर्ग के समर्थकों में टी.एस. इलियट आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय है। [3]

---

[1] ुवाद प्रक्रिया, डॉ. रीता रानी पालीवाल, पृ.सं. 69
[2] ुवाद प्रक्रिया, डॉ. रीता रानी पालीवाल, पृ.सं. 69
[3] ुवाद प्रक्रिया, डॉ. रीता रानी पालीवाल, पृ.सं. 70

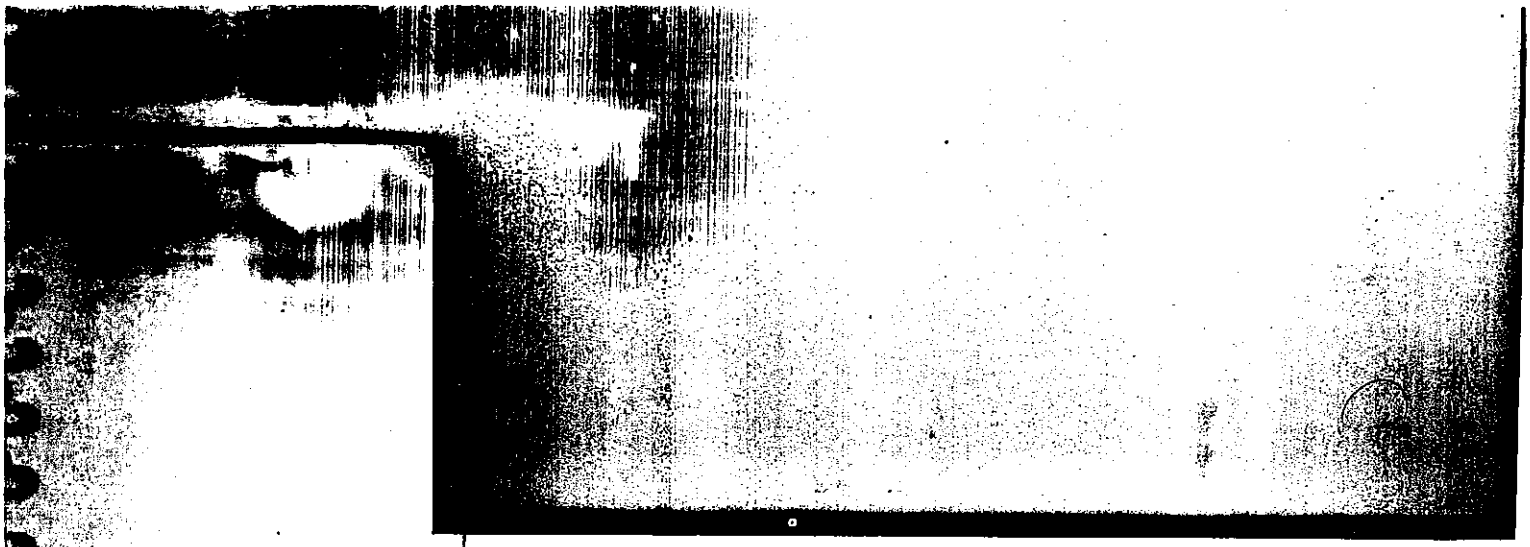

पंजीकृत संख्या/RNI/TELHIN/2016/70799

ISSN 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-2 अंक-2

वैशाख-ज्येष्ठ 2075/अप्रैल-जून 2018

परामर्श मंडल

प्रो.गोपीनाथन
एम.ए., पीएच.डी.
पूर्व कुलपति, म.ग.आं.हिंदी वि.वि., वर्धा
ई-मेल:govindpanicker@gmail.com

प्रो.टी.आर.भट्ट
एम.ए., पीएच.डी.
विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग,
कर्नाटक वि.वि., धारवाड
ई-मेल:trbhattdwd@gmail.com

प्रो.एम.ज्ञानम
एम.ए., पीएच.डी.
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, के.हिं.सं., मैसूर
ई-मेल:gandhignanam@yahoo.co.in

प्रो.एम.वेंकटेश्वर
एम.ए., पीएच.डी.
हिंदी एवं भारत अध्ययन विभाग, इफ्लू, हैदराबाद
ई-मेल:mannar.venkateshwar9@gmail.com

प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
एम.ए., पीएच.डी.
पूर्व विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य, श्री वेंकटेश्वर वि.वि.
ई.मेल:increddy.1954@gmail.com

संरक्षक

प्रो.कमल किशोर गोयनका
एम.ए., पीएच.डी.
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल
ई-मेल:kkgoyanka@gmail.com

प्रधान संपादक

प्रो.नंद किशोर पाण्डेय
एम.ए., पीएच.डी.
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान
ई-मेल:nkpandey65@gmail.com

संपादक

डॉ.अनीता गांगुली
एम.ए., पीएच.डी.
क्षेत्रीय निदेशक, के.हिं.सं., हैदराबाद
ई-मेल:anitaganguly1954@gmail.com

प्रकाशन सलाहकार

डॉ.स्वर्ण अनिल
एम.ए., पीएच.डी.
केंद्रीय हिंदी संस्थान
ई-मेल :swarananilkhs16@gmail.com

सहयोग

डॉ.एस.राधा

कला एवं परिकल्पना

डॉ.विजय एम.ढोरे

केंद्रीय हिंदी संस्थान

हैदराबाद केंद्र

(मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार)

खंड-2 अंक-2 वैशाख-ज्येष्ठ 2075/अप्रैल-जून 2018

© सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान,
2-2-12/5, डी.डी.कॉलोनी,
हैदराबाद-500007 (तेलंगाना)
फोन/फैक्स - 040-27427208
मोबाइल - 09391367802
ई-मेल - khshyderabad@yahoo.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत प्रति अंक रु. 40.00 वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250/-
(डाक व्यय प्रति अंक रु.35/- तथा
वार्षिक रु.100/- अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10 वार्षिक $ 40.00

मुद्रक : **कर्षक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद**

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी/प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

स्वामित्व : **सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा**

भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज

संपादकीय

प्रधान संपादक की कलम से : प्रो.नंद किशोर पाण्डेय

आलेख

1. बाल साहित्य को डॉ.बालशौरि रेड्डी की देन : डॉ.शकुंतलम्मा वाई. 11
2. बालशौरि रेड्डी की रचनाधर्मिता : प्रो.कमल किशोर गोयनका 14
3. सुब्रह्मण्य भारती कृत 'पांचाली की शपथ' : सुब्रह्मण्य भारती 28
4. कवि मनीषी विनायक गोकाक : डॉ.टी.आर.भट्ट 37
5. तेलुगु की सर्वकालिक लोकप्रिय पौराणिक फिल्म 'मायाबजार' : डॉ.एम.वेंकटेश्वर 45
6. कबीर और सर्वज्ञ : डॉ.टी.जी.प्रभाशंकर 'प्रेमी' 56
7. दक्षिण भारत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ : डॉ.एच.के.वंदना 65
8. तमिल साहित्य के जैनियों का योगदान : डॉ.एम.ज्ञानम 72
9. 'जीवन संग्राम' के महान योद्धा रावूरि भरद्वाज : डॉ.कोम्मिशेट्टि मोहन 78
10. तेलुगु में यक्षगान और मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा : डॉ.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी 85
11. समस्याओं और पीड़ाओं की गाथा है 'नूलेनी' : डॉ.निर्मला एस.मौर्य 95
12. तमिल साहित्य में सूफ़ी स्वर : डॉ.शकीला खानम 102
13. भारतरत्न मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया : अनुज प्रताप सिंह 109
14. बंजारा समुदाय की भाषा-शैली डॉ.वी.रामकोटी 118
15. मलयालम कहावतो में हाथी : डॉ.अनीता गांगुली 122

तमिल साहित्य में सूफ़ी स्वर

डॉ.शकीला खानम

तमिलनाडु में सूफ़ी संतों की एक लंबी परंपरा रही है। अतः यहाँ पर आने वाले प्रज्ञिम सूफ़ी संत मज़हर वली तबले आलम बादशाह हैं जो नाथर वली के नाम से प्रसिद्ध हैं। डॉ.ट्रीस्टन, (जिनका जीवन काल 969 से 1039 ई.) के अनुसार-"वे इस्तंबूल के सुल्तान थे, जिन्होंने अपना सिंहासन अपने भाई के हवाले किया और इस्लाम के प्रचार के लिए निकल पड़े।"[1] "तिरुचिरापल्ली में स्थित इनका मकबरा तथा नागोर के साहुल हमीद का मकबरा यहाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।"[2] तमिनाडु में ऐसा कोई मुसलमान या हिंदू नहीं है जो इनके बारे में जानता न हो। तमिलनाडु में इन संतों के अतिरिक्त असंख्य संतों के मकबरे देखे जा सकते हैं। जैसे-चेन्नई, वेल्लोर, कड्डलोर, मदुरई, नागपट्टणम, सामंतापुरम, शिव गंगाई, तिरुवरूर और तुथुकुडी जिले में।"[3] तमिलनाडु में कोई ऐसा गाँव या शहर नहीं है जहाँ हमें इन सूफ़ी संतों के मकबरे न मिलते हों।

कई सूफ़ी संतों ने सूफ़ी विचारधारा को अपनी रचनाओं के माध्यम से व्यक्त किया। उन्होंने असंख्य कविताओं की रचना की तथा गद्य में भी अपने विचार प्रकट किये। इनकी सभी रचनाएँ आज भी लोकप्रिय हैं। इस संदर्भ में सबसे पहले आने वाला नाम है पीर मुहम्मद (1664/1024 हिज्री)। इनका काव्य सूफ़ी विचारधारा से समृद्ध है। डॉ.शाहबुद्दीन के अनुसार इन्होंने गूढ़ सत्य की अभिव्यंजना रहस्यवादी शैली में की है। इनकी दो रचनाएँ मुख्य रूप से उल्लेखनीय हैं। वे हैं "ग्यानमनिमलै और बिस्मुल कुर्रम।"[4] इनकी अधिकांश रचनाएँ प्रकाशित हैं और उपलब्ध भी हैं। वास्तविकता यह है कि ये रचनाएँ कई बार पुनः प्रकाशित हुई हैं और बाजार में उपलब्ध भी हैं। ~~वास्तविकता यह है कि ये रचनाएँ कई बार पुनः प्रकाशित हुई हैं और बाजार में उपलब्ध भी हैं।~~ इसका एकमात्र कारण यह है कि इन रचनाओं के प्रति लोगों की रुचि एवं रुझान है जो इन सूफ़ियों के प्रति सम्मान को प्रकट करता है।

अन्य सूफ़ियों के अंतर्गत कदियनेल्लोर के शेख उस्मान वली (1111-1197 हिज्री) ने तमिल में कई सूफ़ी कविताओं की रचना की। तिरुवनंतपुरम के नूह वली उल्लाह (1154 हिज्री) ने 'वीर पुरणम पेरिया' नामक रचना की। मुत्तु वप्प वली (जन्म 1187 हिज्री) ने तमिल में कुरआन की टीका लिखी। साथ ही, यहाँ के मुसलमानों और हिंदुओं में कुननगुडी मस्तान (1207 हिज्री/1792-1838 ई.) भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। केरल के पुलावर इब्राहीम काका ने तमिल में काव्य रचना की। तयका साहिब वली ने अरबी और तमिल में लगभग चालीस किताबों की रचना की। शेख़ बशीर अप्पवली (मृत्यु 1216 हि) ने तमिल में कई रचनाएँ कीं। कोतारू के शेख़ मुहम्मद मदीना (मृत्यु 1936 ई.) जो अरबी, फ़ारसी, उर्दू और तमिल के विद्वान थे, उन्होंने कई रचनाओं का उर्दू से तमिल में अनुवाद किया। "चेन्नई के रोयापुरम के नैना मुहम्मद पुलवर (मत्यु 1372 हि.) जो एक कवि थे और उन्होंने 'तक्कले पीर मोहम्मद' और पूवरू नूह वलीअल्लाह की कविताओं की व्याख्या की।"[5] कीलैकरै के सूफ़ी कवि अब्दुल कादर जो महानंद बाबा (1891-1940) के

नाम से प्रसिद्ध हैं, इनकी कविताएँ सर्वप्रथम 1958 में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात तिरुचिरापल्ली के जमाल मुहम्मद नाम के एक कपड़े के व्यापारी द्वारा सन् 2008 में पुनः प्रकाशित करवाई गई। इस समय इन प्रसिद्ध कवियों के अतिरिक्त कई छोटे-मोटे रचनाकार भी हुए। इनके अंतर्गत "खलीफ़ाह शेख़ शाहुल हमीद अप्प नयगम, शेखु थंबि ग्रानैर, अब्दुल कादिर वलय मस्तान, सैदु अब्दुल वरिद अलीम मौलाना इदरूस, मेलप्पलयम मुहैयोद्दीन बशीर और मोहम्मद हम्ज़ा लेब्बे आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।"[6] सूफ़ी विचारधारा यहाँ की सामाजिक संरचना या परिवेश का अभिन्न अंग है तथा यहाँ की जनता इससे गहरे रूप से प्रभावित होने के कारण एवं आत्मसात करने के कारण उनके काव्यानुभव ने उन्हें अपने अंतर्मन की अभिव्यक्ति का मार्ग बताया है। यहाँ तक कि महिलाएँ भी इस गूढ़ अनुभव से गुजर रही थीं।

पुरुष और स्त्री के बीच भिन्नता केवल शारीरिक रूप से होती है, आत्मा के स्तर पर दोनों समान हैं। सभी की आत्मा में सच्चाई को अर्थात् ईश्वर को जानने की उत्कंठा होती है। तमिलनाडु का सौभाग्य यह है कि वहाँ महिला सूफ़ी संत भी हुए। सबसे पहले आत्रंगकराय नचियार का नाम लिया जाता है। उनका मकबरा आत्रंगकराय नामक गाँव में है, जिसका अर्थ होता है नदी का किनारा। यह गाँव तिरुवेनपल्ली के करीब पड़ता है। उनका वास्तविक नाम कुरैशी बीबी है और वे 'अरै कसु बीबी' के नाम से भी जानी जाती हैं, जिस का तमिल में अर्थ है 'आधे सिक्के वाली औरत'। ऐसा माना जाता है कि "उनकी मृत्यु तीन सौ साल पहले हुई। बख्शी बेगम (टीपू सुलतान की विमाता), बी अम्मा जो पापा बी अम्मा (13 वीं सदी हिज्री) के नाम से भी जानी जाती हैं, चेन्नई की हसीना बेगम (1269-1309 हि), ज़च्चा बीबी (तंजौर), साहिबज़ादी बीबी (अन्नामलई), सैदानी बीबी (वेल्लोर), शैखुना अम्मा बीबी जो सैनम्मा बीबी की माँ के नाम से भी जानी जाती हैं (सैन पल्लि) आदि तमिलनाडु की प्रसिद्ध महिला सूफ़ी संत हैं।"[7] इनके अतिरिक्त और भी तीन महिला सूफ़ी संत हुई हैं, वे हैं-रसूल बीबी (तेनकासी), कच्ची पिल्लै अम्मल (इलायन कुड़ी) और आसिमा अम्मल (कीलकरै) जिनके नाम तमिल साहित्य में प्रमुख रूप से लिये जाते हैं। तमिलनाडु के तमिल साहित्य के अंतर्गत इनका सूफियाना काव्य आज भी प्रसिद्ध है।

ये तीनों सूफ़ी संत महिलाएँ तमिल साहित्य में दक्ष थीं और इन्होंने कई सूफ़ी काव्यों की रचना की। "रसूल बीबी का काव्य संग्रह 'ग्यानमिर्था सागरम' का प्रकाशन श्री रामानुज प्रेस से (तेनकासी) से सन् 1910 में हुआ।"[8] दुर्भाग्यवश हमें उनके जीवन संबंधी जानकारी प्राप्त नहीं है। आसिया अम्मल का जन्म 1865 में और मृत्यु 1947 में हुई। उनके पिता अपने समय के सूफ़ी संत थे। वे खल्वत नैगम (जन्म 1847) की शिष्या थीं। उनकी रचनाएँ 'ज्ञान दीब रथिनम' और 'मालिखा रथिनम' अपनी उत्तम अभिव्यक्ति शैली के कारण तमिल सूफ़ी साहित्य के अंतर्गत आज भी पढ़ी जाती हैं। इदरीस नामक एक तरफदार सूफ़ी संत ने इनकी चौदह कविताओं का संकलन हाल ही में प्रकाशित करवाया है, जिसका शीर्षक है 'आसिया अम्मविन ज्ञान पादलगल।'"[9] तीसरी महिला सूफ़ी संत कच्ची पिल्लै अम्मल इल्याकुंदी की निवासी हैं। इनकी भी जीवन संबंधी जानकारी प्राप्त नहीं है किंतु इनका सूफी काव्य तमिलनाडु के कई क्षेत्रों में प्रसिद्ध है। इन तीनों कवयित्रियों को

स्मारिका

वां विश्व हिन्दी सम्मेलन

१०-१२ सितंबर, २०१५
भोपाल, भारत

विदेश मंत्रालय
भारत सरकार

सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी

– प्रो. शकीला खानम

ABSTRACT

[illegible]-प्रसार के माध्यम से अपनी बात को लोगों तक पहुँचाना आज के युग का [illegible] है। कंप्यूटर युक्त तकनीक और अन्य संचार साधनों के रूप में संचार–प्रौद्योगिकी [illegible] जीवन के सभी व्यवहारों में अनिवार्य आवश्यकता के रूप में उभर रही है। एक [illegible] के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी का क्षेत्र सर्वाधिक वृद्धि वाला क्षेत्र सिद्ध हो रहा है। [illegible] विश्व में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली दूसरी भाषा है। मातृभाषा के [illegible] में हिंदी का प्रयोग करने वाले भारतीयों की संख्या लगभग साढ़े तैंतीस करोड़ है। [illegible] की ही नहीं अखिल विश्व में विशाल क्षेत्र की भाषा भी है। विश्व के 130 से [illegible] देशों में भारतीय मूल के डेढ़ करोड़ से भी अधिक लोग रह रहे हैं। इन देशों में से [illegible] है – मारीशस, फिज़ी, गुयाना, ट्रिनीडाड और टोबैको, सूरीनाम, नेपाल, [illegible], श्रीलंका, म्यांमार, दक्षिण आफ्रिका, थाईलैंड, सिंगापुर, स्वीडन, डेनमार्क आदि। [illegible] का प्रयोग करने वाली इतनी बड़ी जनसंख्या को देखते हुए यह कहा जा सकता है [illegible] में प्रौद्योगिकीय साधनों एवं सॉफ़्टवेयरों आदि को विकसित करना अधिक महत्त्वपूर्ण [illegible] जनसंख्या के एक बड़े भाग द्वारा इनका प्रयोग किया जा सके। कंप्यूटर को [illegible] बनाने, उसके प्रयोग के लिए लोगों में और अधिक अभिरुचि जागृत करने के लिए [illegible] पर उपलब्ध सुविधाओं एवं कंप्यूटर विज्ञान की शिक्षा को हिंदी में उपलब्ध कराने [illegible] आवश्यकता है। सूचना प्रौद्योगिकी के प्रसार एवं प्रचार ने हमारे देश की राष्ट्रभाषा हिंदी [illegible] में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

भाषा और संस्कृति शिक्षण : सामयिक चिन्तन का सार

—डॉ. शकीला ख़ानम

प्रो. दिलीप सिंह जी मेरे प्रिय लेखक, भाषावैज्ञानिक व भाषाचिन्तक रहे हैं और हैं। साहित्यिक रुचि के साथ साथ भाषा व संस्कृति शिक्षा में रुचि रखनेवाली मेरी जैसी शोधार्थी, शिक्षार्थी और अध्येता पर प्रोफ़ेसर साहब का जो प्रभाव है वह उनकी रचनाएँ पढ़कर है। वास्तव में साहित्यकार या भाषाविज्ञानी या भाषाचिन्तक अपने सृजनात्मक तथा शोध क्षेत्र में ही सम्पूर्ण रूप में स्थित व मग्न रहता है। उसका शोध व सृजन ही उसका वास्तविक रूप होता है। इसके बावजूद उसे देखकर तथा उसका सत्संग पाकर जो प्रेरक आनंदोपलब्धि होती है वह बहुत मूल्यवान होती है। ऐसी उपलब्धि मुझे केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद में एम.ए. (हिन्दी) करते समय मिली थी। सौभाग्यवश एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में पहली बार उनको सुनने का अवसर मिला। तदुपरांत ऐसे अनेक अवसर मुझे अपने विद्यार्थी जीवन में मिलते रहे। लेकिन दुर्भाग्यवश मैं उनकी पूर्णकालिक छात्रा नहीं बन सकी। एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त करने तक उसी विश्वविद्यालय में फँसी रही। रोजगार के क्षेत्र में कई पड़ाव पार करने के बाद जब मेरी नियुक्ति डॉ. बी.आर. अंबेडकर सार्वत्रिक विश्वविद्यालय में सहायक प्रोफ़ेसर के पद पर हुई तब सौभाग्यवश मुझे डॉक्टर साहब को हमारे विश्वविद्यालय की स्नातक पाठ्यक्रम समिति की बैठक में विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित करने का अवसर मिला। अनुभव, आयु और कद में बहुत छोटी होने के कारण उनके सामने खड़े होने तक में डर लगता था। पर मेरा सौभाग्य था कि डॉक्टर साहब को अपनी कार से बैठक के लिए हमारे विश्वविद्यालय, जुबिली हिल्स ले गयी। यह बात सन् 1995 की है। उस समय डॉक्टर साहब ख़ैरताबाद में रहा करते थे। सभा के आस पास ही उनका मकान था। हालाँकि जैसे तैसे मैं गाड़ी चला लेती हूँ लेकिन हैदराबाद की सड़कों की दयनीय स्थिति के कारण मुझे डर लग रहा था कि कहीं डॉक्टर साहब को मेरी ड्राइविंग से तकलीफ़ न हो। इसलिए सहमी सहमी सी थी और पूरे रास्ते भर सर से बात ही नहीं कर पाई। लेकिन दो दिन में इस पाठ्यक्रम समिति की बैठकों में डॉक्टर साहब के साथ चर्चाओं में सहभागी रही और हमने अन्य सदस्यों के साथ मिलकर पाठ्यक्रम तैयार किया। इस दौरान प्रोफ़ेसर साहब से ज्ञानार्जन करने का लाभ भी मैंने उठाया। उनके निकट सान्निध्य से मुझे उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक भावमय, शांत और गम्भीर चिन्तक जैसा लगा। इस दौरान मैंने यह भी ग़ौर किया कि किसी सहज गरिमा वाले व्यक्ति के सामने उनके अन्य समानधर्मी सहज रूप में ही हल्के व फीके पड़ जाते हैं। उसी दिन से मैं डॉक्टर साहब की ऐसी पाठक बन गयी जो उनकी तमाम रचनाएँ पढ़ना चाहती थी। अपने गम्भीर जीवनानुभवों और ज्ञान को जिस प्रकार उन्होंने अपनी पुस्तकों में निचोड़ रखा है उससे उनके व्यक्तित्व में निहित संतुलन, समन्वय और चिन्तन के सही दिशाबोध का पता चलता है। उनकी पुस्तकों के माध्यम से मैंने यह जाना कि डॉक्टर साहब की सहज संप्रेषणीयता, शिल्प कौशल और श्लिष्ट विदग्धता की कला आदि में अद्भुत

[illegible] शिक्षार्थ और [illegible] सिर्फ पिपासी [illegible] महत्वपूर्ण रूप से सक्षम व प्रभावकारी हैं। मैं [illegible] कह सकती हूँ कि प्रो. दिलीप सिंह जी इस अर्थ में केवल अकेले ऐसे भाषाचिन्तक हैं जिन्होंने हिन्दीतर क्षेत्रों में हिन्दी भाषा, भाषाविज्ञान, साहित्य और संस्कृति शिक्षण में हिन्दीतर भाषाभाषियों के बीच अनेक मापदंड स्थापित किए हैं।

बौद्धिक क्षेत्र के बुद्धिजीवियों के बीच प्रो. दिलीप सिंह जी का अपना विशेष स्थान है। वे एक सहज, सरल, आडंबररहित, नवप्रवर्तनकारी एवं प्रसिद्ध भाषाचिन्तक हैं। आप एक ऐसे मनीषी, भाषा शिक्षक और शोधार्थी हैं जो लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचकर भी उसे अंतिम चरण नहीं मानते बल्कि सतत नयी खोज करते हुए दूसरी बोलियों, भाषाओं, लोक संस्कृतियों के सार में भी प्रवेश कर नये सूत्रों व सिद्धान्तों को खोजते हैं। उनकी दृष्टि में भाषा शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जो संस्कृति से जुड़ी हुई है तथा भाषा शिक्षण की प्रक्रिया अपने आप संस्कृति शिक्षण की प्रक्रिया है। अर्थात ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। किसी भी समाज की संस्कृति को जानने के लिए उस समाज की भाषा को जानना आवश्यक हो जाता है क्योंकि संस्कृति का परिचय हमें उस समाज की भाषा से मिलता है। किसी भाषा प्रयोक्ता को अमुक समाज में अमुक भाषा का व्यवहार कैसे करना है, यह जानना ही भाषा के व्यवहार के सन्दर्भ में भाषा की संस्कृति को जानना है। इससे भाषा के सांस्कृतिक तत्वों का भी पता चलता है। उदाहरण के लिए भाषा की संस्कृति में संबोधन, अभिवादन, विनम्रता, धन्यवाद, आदर, शिष्टाचार, आयु-पद-रिश्ते-नाते, वरिष्ठ व्यक्तियों के साथ व्यवहार, सभ्यता, आचरण, सदाचार, संस्कार, धर्म, दर्शन, मिथक, प्रथाएँ, धार्मिक रीति रिवाज आदि से सम्बन्धित शब्दों का प्रयोग उस भाषा के समाज के अनुसार होता है। तुर्की के अंकारा विश्वविद्यालय में अपने विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा सिखाने के लिए मैंने सर्वप्रथम यह कोशिश की कि मैं तुर्की भाषा की संस्कृति को पहले जानूँ और समझूँ, इससे मुझे हिन्दी भाषा सिखाने में आसानी होगी। मुझे यह भी अच्छा लगा कि उनकी मातृभाषा के माध्यम से ही उनको हिन्दी सिखाऊँ न कि अंग्रेजी के माध्यम से। सो मैंने तुर्की भाषा सीखी और उसके माध्यम से भाषा की संस्कृति का भी अध्ययन किया। इस दौरान मुझे भारतीय व तुर्की समाज की संस्कृति को भी तुलनात्मक ढंग से देखने का अवसर मिला। मुझे लगा कि तुर्की भाषा की संस्कृति अत्यन्त महत्वपूर्ण और गरिमामय है और तुर्कियों में अपनी मातृभाषा के प्रति अत्यन्त गौरव और श्रद्धा है। इसका उदाहरण है तुर्की में 99.9 प्रतिशत जनता केवल व केवल तुर्की भाषा ही बोलती हैं और देश का पूरा प्रशासन, व्यापार, वाणिज्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी आदि सभी कार्य तुर्की भाषा में ही होते हैं। इसका अर्थ कतई यह नहीं है कि वहाँ के लोगों को अंग्रेजी आती ही नहीं। लेकिन उनमें अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति आत्म गौरव, श्रद्धा व निष्ठा है। मैं अपने विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा व संस्कृति सिखाते समय वे उदाहरण देने का प्रयत्न करती थी जो दोनों संस्कृतियों में लगभग समान हों। उदाहरणस्वरूप तुर्की में भोजन शुरू करने से पहले अतिथि से कहते हैं कि 'आफ़िया तोसुन'। इसका मतलब हिन्दी में है 'भोजन अच्छा करें' या 'भरपेट खाएँ'। वैसे ही भोजन के बाद अतिथि या परिवार के सदस्य माँ से या भोजन जिन्होंने भी बनाया हो उनसे कहते हैं कि 'एलनेसालक' अर्थात 'ईश्वर आपके हाथों में अच्छी ताकत दे जो हमारे लिए इतना अच्छा स्वादिष्ट भोजन बनाया है।' ऐसे